Std .VIII HINDI LIT(कौरव नगरी भाग -7)

प्रश्न उत्तर:---

प्रश्न 1 धृतराष्ट्र किस प्रकार अपनी आंतरिक सच्चाई प्रकट करते हैं?

उत्तर :-अंत में धृतराष्ट्र अपनी आंतरिक सच्चाई विदुर के समक्ष प्रकट करते हुए कहते हैं कि वे जन्मांध हैं, जो सही- ग़लत को नहीं तोल सकते। उनके पुत्र जो उनके अंश हैं, उनके खून से उनका जन्म हुआ है, वही उनके लिए शाश्वत सत्य ,आदि व अंत हैं।उनका हक़ दिलाना, उनके लिए स्वार्थी होना ही उनकी नीति व धर्म हैं। उनकी नीतियांँ इसी सत्य पर आधारित हैं कि किसी भी तरह हस्तिनापुर का सिंहासन उनके पुत्रों को प्राप्त हो। उनके लिए, उनके पुत्र ही सर्वस्व हैं। पुत्र के सिवा न दुनिया को देखा, न समझा, न जाना ।उनके लिए सारी मर्यादाएँ उनके पुत्रों तक ही सीमित हैं।

प्रश्न 2 क्यों कौरव दल स्वयं को झूठा व शक्तिहीन समझने लगा था?

उत्तर :-जब राजा सत्य के लिए युद्ध करता है और स्वार्थ से दूर रहता है तो उसकी सेना भी पूरे जोश व दर्प से युद्ध करती है। ऐसी स्थिति में विजय निश्चित होती है।पर जब सैन्य दल को यह पता होता है कि राजा सिर्फ़ अपने स्वार्थ व पुत्र मोह में राज्य को युद्ध की अग्नि में झोंक रहा हो, तो ऐसी स्थिति में सैनिक स्वयं को झूठा, शक्तिहीन, बलहीन समझने लगते हैं।

प्रश्न 3. 'संजय मुझे देते है केवल शब्द'- से क्या आशय है?

उत्तर :- धृतराष्ट्र कहते हैं कि जो -जो संवाद उन्हें संजय ने सुनाए, वह सब उनके लिए निरर्थक थे। वे पूरी बात समझ ही नहीं पाए क्योंकि जन्मांध होने के कारण कालिमा के सिवा उन्होंने कुछ देखा ही नहीं। वे केवल सुन सकते थे पर संजय के बोले हुए शब्दों से वे आकृतियाँ नहीं बना सकते क्योंकि उनकी कल्पना भी कालिमा ही थी।